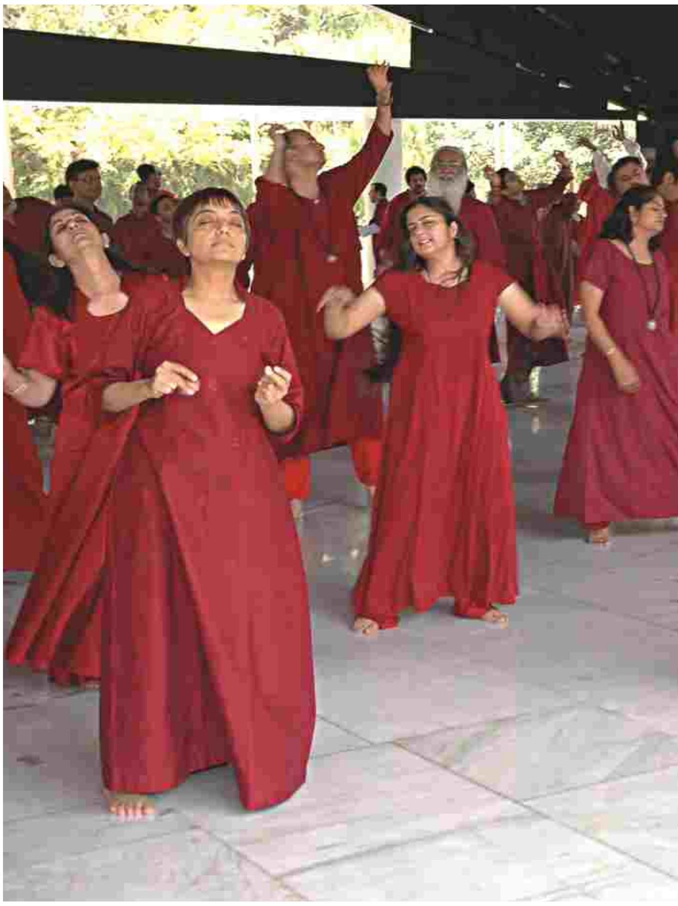

योग और तंत्र के गुप्त प्रयोग

असंयतात्मना योगी दुष्प्राप इति में मतिः।
वश्यात्मना तू यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः।।

मन को वश में न करने वाले पुरुष द्वारा योग दुष्प्राप्य है अर्थात प्राप्त होना कठिन है और स्वाधीन मन वाले प्रयत्नशील पुरुष द्वारा साधन करने से प्राप्त होना सहज है, यह मेरा मत है।

कृष्ण ने दो-तीन बातें इस सूत्र में कही हैं, जो समझने जैसी हैं।

एक, मन को वश में करने वाले पुरुष द्वारा योग की उपलब्धि अति कठिन है; असंभव नहीं कहा। बहुत मुश्किल है; असंभव नहीं कहा। नहीं ही होगी, ऐसा नहीं कहा। होनी अति कठिन हैं, ऐसा कहा है। तो एक तो इस बात को समझ लेना जरूरी है।

दूसरी बात कृष्ण ने कही, मन को वश में कर लेने वाले के लिए सरल है, सहज है उपलब्धि योग की।

और तीसरी बात कही, ऐसा मेरा मत है। ऐसा नहीं कहा, ऐसा सत्य है। ऐसा कहा, दिस इज़ माइ ओपीनियन, ऐसा मेरा मत है। ये तीन बातें इस श्लोक में खयाल ले लेने जैसी हैं।

पहली बात तो यह, जो बहुत अजीब मालूम पड़ेगी कि कृष्ण ऐसा कहें। कहना था कि मन को जो वश में नहीं करता, उसके लिए योग की उपलब्धि असंभव है, इंपासिबल है; नहीं होगी। लेकिन कृष्ण कहते हैं, कठिन है, असंभव नहीं। इसका अर्थ? इसका अर्थ यह हुआ कि कठिन हो, लेकिन किसी स्थिति में, किसी व्यक्ति के लिए, मन को वश में बिना किए भी उपलब्धि संभव हो सकती है। कठिन है, लेकिन संभव हो सकती है। अति कठिन है, लेकिन फिर भी हो सकती है।

मन को वश में करने वाला कैसे उपलब्धि को

> *तंत्र के पंच मकार प्रसिद्ध हैं। वह कहता है, पांच म का जो सेवन करेगा—सेवन, त्याग नहीं—वही योग को उपलब्ध होगा। मदिरा का त्याग नहीं, सेवन। मैथुन का त्याग नहीं, सेवन। मांस का त्याग नहीं, सेवन। जो उसको भोगेगा, वही योग को उपलब्ध होगा।*

प्राप्त होता है, उसकी हमने बात की। अब थोड़ा हम उस थोड़े-से अल्पवर्ग के संबंध में बात कर लें, जिसकी वजह से कृष्ण असंभव न कह सके।

बहुत ही छोटा वर्ग है। कभी करोड़ में एकाध आदमी ऐसा होता है, जो मन को बिना वश में किए योग को उपलब्ध हो जाता है। बहुत रेयर फिनामिनन है; बहुत करीब-करीब न घटने वाली घटना है; लेकिन घटती है। खुद कृष्ण भी उन्हीं लोगों में से एक हैं।

इसलिए कृष्ण ने जानकर कहा है यह, बहुत समझकर कहा है। खुद कृष्ण भी उन्हीं लोगों में से एक हैं। क्योंकि अर्जुन जरूर ही पूछ लेता है हे मधुसूदन, आपको कभी आसन लगाए नहीं देखा! आपको कभी प्राणायाम करते नहीं देखा। आपको कभी प्रभु-स्मरण करते नहीं देखा। आपको किसी तपश्चर्या में से गुजरते नहीं देखा। जिस योग-साधना की आप बात कर रहे हैं, जिस अभ्यास की आप बात कर रहे हैं, वह कभी आपके आस-पास दिखाई नहीं पड़ा। और जिस वैराग्य की आप बात कर रहे हैं, उसका तो आपके आस-पास कोई भी अंदाज नहीं मिलता, अनुमान नहीं लगता। मोर पंख बांधकर, बांसुरी

करोड़ में एकाध आदमी ऐसा होता है, जो मन को बिना वश में किए योग को उपलब्ध हो जाता है। बहुत रेयर फिनामिनन है; बहुत करीब-करीब न घटने वाली घटना है; लेकिन घटती है। खुद कृष्ण भी उन्हीं लोगों में से एक हैं।

आपके चारों तरफ रास करती हैं। वैराग्य कहीं दिखाई नहीं पड़ता, मधुसूदन!

अर्जुन निश्चित ही ऐसा पूछता। लेकिन अर्जुन को पूछने का उपाय कृष्ण ने नहीं छोड़ा। इसलिए अर्जुन ने नहीं पूछा क्योंकि कृष्ण ने कहा, बहुत कठिन है अर्जुन, असंभव नहीं है।

तो उस थोड़े-से वर्ग, जिसमे कृष्ण भी आते हैं और कभी एकाध-दो आदमी आ पाते हैं सदियों में, उस छोटे-से वर्ग की भी हम बात कर लें, क्योंकि उसका भी खतरा बड़ा है। क्योंकि जो उस वर्ग में नहीं आता, वह अगर सोच ले कि यह होगा कठिन, लेकिन हम कठिन मार्ग से ही जाएंगे, तो बहुत डर यह है कि वह कभी नहीं पहुंचेगा, भटकेगा, व्यर्थ समय और जीवन को कर लेगा।

ऐसा हुआ इस देश में। इस देश ने बड़े गहरे प्रयोग किए हैं। तंत्र उन प्रयोगों में से है, जो उनके लिए है वस्तुतः, जो मन को वश में न करें। इसलिए तंत्र जब इसोटेरिक था, कुछ थोड़े-से लोग उस पर प्रयोग करते थे, तब वह बड़ी अद्‌भुत प्रक्रिया थी। लेकिन और लोगों को भी लगा कि यह तो बहुत अच्छा है। मन को वश में भी न करना पड़े और योग उपलब्ध हो जाए!

तंत्र के तो सभी सूत्र उलटे हैं।

यह जो थोड़ी-सी जगह छोड़ी है कृष्ण ने, वह तंत्र के लिए छोड़ी है। उसकी बात करनी उन्होंने उचित नहीं समझी है, क्योंकि उसकी बात करनी सदा ही खतरे से भरी है। क्योंकि हम सबका मन ऐसा होगा कि अपने को अपवाद मान लें। और हम सबका मन ऐसा होगा कि जब मन को बिना वश में किए जा सकता है, तो होगा लंबा मार्ग, लेकिन यही ज्यादा आनंदपूर्ण रहेगा। मन को वश में भी न करेंगे और पहुंच भी जाएंगे योग को। दूसरे न पहुंचते होंगे, हम तो पहुंच ही जाएंगे!

इसलिए तंत्र जब व्यापक फैला, तो अति कठिनाई उसने पैदा की। हजारों लोग यह सोचकर कि ठीक है, क्योंकि तंत्र कहता है...। तंत्र के पंच मकार प्रसिद्ध हैं। वह कहता है, पांच म का जो सेवन करेगा—सेवन, त्याग नहीं—वही योग को उपलब्ध होगा। मदिरा का त्याग नहीं, सेवन। मैथुन का त्याग नहीं, सेवन। मांस का त्याग नहीं, सेवन। जो उसको भोगेगा, वही योग को उपलब्ध होगा। यह बहुत ही छोटा-सा अल्पवर्ग है, जिसके लिए यह बात बिलकुल सही है।

और ध्यान रहे, वह अल्पवर्ग अति कठिन मार्ग से गुजरता है। दिखता सरल पड़ता है कि शराब पीने से ज्यादा सरल और क्या हो सकता है! शराबी सड़कों पर पीकर रास्तों पर पड़े हैं। शराब पीने से ज्यादा सरल क्या होगा? लेकिन तंत्र की प्रक्रिया बहुत कठिन है, अति दूभर है।

तंत्र कहता है, शराब पीना, लेकिन बेहोश मत होना। यह साधना है। शराब पीए जाना और बेहोश होना मत। अगर बेहोश हो गए, तो साधना का सूत्र टूट गया। तो शराब पीना और बेहोश मत होना, शराब पीना और होश को कायम रखना।

हम तो होश बिना शराब पीए कायम नहीं रख पाते। शराब पीकर कायम रख पाएंगे? बिना ही पीए पीए-सी हालत रहती है दिन-रात! जरा में होश खो जाता है। तंत्र कहता है, शराब पीना, उसकी मनाही नहीं है। लेकिन होश कायम रखना।

तो तंत्र की अपनी विधि है, कि जब शराब पीयो, कितनी मात्रा में पीयो, कहां रुक जाओ; होश को कायम रखो। फिर धीरे-धीरे मात्रा बढ़ाते जाओ। वर्षों की लंबी यात्रा में वह घड़ी आती है कि कितनी ही शराब कोई पी जाए, होश कायम रहता है। फिर तो तंत्र को यहां तक करना पड़ा कि कोई शराब काम नहीं करती, तो सांप पालने पड़ते थे। अभी भी आसाम में कुछ तांत्रिक सांप पालते हैं और जीभ पर सांप से कटाएंगे। और साधना की आखिरी कसौटी यह होगी कि सांप काट ले, और होश कायम रहे।

है प्रक्रिया अदभुत, पर बड़ी दूभर है। शराब छोड़ने को तंत्र नहीं कहता। तंत्र बहुत साहसियों का मार्ग है। वे कहते हैं, हम छोड़ेंगे नहीं। अगर कीचड़ में से कमल हो सकता है, तो हम शराब में से होश पैदा करेंगे। और बेहोशी में अगर होश न रह सका, तो होश की कीमत कितनी है! और अगर शराब पीकर सारी बुद्धि नष्ट हो जाए, तो ऐसी बुद्धि को बचाने में भी कितना सार है!

तंत्र कहता है, मैथुन का हम त्याग न करेंगे; ब्रह्मचर्य हम न साधेंगे। हम तो मैथुन में प्रवेश करेंगे, और वीर्य को अस्खलित रखेंगे।

बहुत कठिन है मामला। पर तंत्र ने इसके प्रयोग किए। पर इसोटेरिक थे, गुप्त थे। साधारणतः वे समूह में नहीं किए जा सकते थे। पर धीरे-धीरे खबर तो फैलनी शुरू हुई। और उनको भी पता चल गया, जो शराब पीकर`चा कि

नालियों में पड़े रहते थे। उन्होंने सोचा कि हम भी तंत्र की साधना क्यों न करें? यह तो बहुत ही उचित है। फिर कोई यह भी नहीं कह सकता कि शराब पीना पाप है। फिर तो शराब पीना पुण्य हो गया।

तो नाली में शराब पीकर जो पड़ा था, उसने जब शराब पीकर तंत्र की साधना शुरू की, तो मंदिर में नहीं पहुंचा, वह और नाली में, और नाली में चला गया। और मैथुन तो सारा जगत कर रहा है। तंत्र ने जब कहा कि मैथुन में ही उपलब्धि हो जाएगी परमात्मा की, कहीं भागने की जरूरत नहीं, त्यागने की जरूरत नहीं। तो लोगों ने कहा, फिर ठीक ही है। कहीं कुछ करने की जरूरत नहीं। मैथुन तो हम कर ही रहे हैं। लेकिन तंत्र की शर्त है।

एक घटना मुझे याद आती है। एक तांत्रिक के पास एक त्यागी साधु गया। वहां बड़ी-बड़ी मटकियों में भरी हुई शराब रखी थी और एक युवा तांत्रिक बैठकर ध्यान कर रहा था। साधु बहुत घबड़ाया। शराब की बास चारों तरफ थी। उस साधु ने कहा कि मटके-मटके भरकर शराब कौन, पीता है यहां? उस तांत्रिक गुरु ने कहा कि यह जो युवक बैठा है, इसके लिए रखी है। एक मटका तो यह एक ही गटक में पी जाता है, एक सांस में। उस आदमी ने कहा कि मुझे भरोसा नहीं आता। फिर इसकी हालत क्या होती है? उसके गुरु ने कहा कि हालत वही रहती है, जो थी। शराब अछूती गुजर जाती है। आर-पार निकल जाती है, बीच में नहीं पहुंचती है, केंद्र को नहीं छूती है। उसने कहा, मैं मानूंगा नहीं, मैं देखना चाहूंगा। एक सांस में पानी की एक मटकी पीना मुश्किल है, और शराब...।

उस तांत्रिक गुरु ने युवक को कहा कि एक मटकी शराब पी जा। उसने कहा कि एक मिनट का मुझे मौका दें, मैं अभी आया। गुरु थोड़ा हैरान हुआ कि एक मिनट का मौका उसने क्यों मांगा? एक मिनट बाद वह आया और एक मटकी उठाकर पी गया। वह साधु भी चकित हुआ। एक सांस में!

साधु के जाने पर गुरु ने उससे पूछा कि एक मिनट का समय तूने क्यों मांगा था? उसने कहा कि मैंने कभी एक दफे में पीया नहीं था, तो मैं अंदर जाकर अभ्यास करके आया, एक मटकी अंदर पीकर, कि मैं पी पाऊंगा कि नहीं पी पाऊंगा। कभी मैंने एकदम से ऐसा किया नहीं था, इसलिए जरा अभ्यास के लिए अंदर गया। एक मटकी पीकर देखी, कि ठीक है; हो जाएगा।

यह जो वर्ग था साधकों का, यह बहुत कठिन वर्ग है। मैथुन हो, स्खलन नहीं। और मैथुन की यात्रा पर आदमी निकलता ही इसलिए है कि स्खलन हो। तो आप यह मत सोचना कि तंत्र मैथुन के पक्ष में है। तंत्र तो मैथुन के अतिक्रमण की बात है।

> *तो तंत्र की अपनी विधि है, कि जब शराब पीयो, कितनी मात्रा में पीयो, कहां रुक जाओ; होश को कायम रखो। फिर धीरे-धीरे मात्रा बढ़ाते जाओ। वर्षों की लंबी यात्रा में वह घड़ी आती है कि कितनी ही शराब कोई पी जाए, होश कायम रहता है।*

मैथुन के लिए जाता ही आदमी इसलिए है कि स्खलन हो। जो बोझ उसके चित्त पर और शरीर पर है, वह फिंक जाए। और तंत्र कहता है, मैथुन सही, स्खलन नहीं। और अगर कोई व्यक्ति मैथुन की स्थिति में अस्खलन को उपलब्ध हो जाए, तो इससे बड़ा ब्रह्मचर्य और क्या होगा? उन ब्रह्मचारियों से, जो कि स्त्री को देखने में डरते हैं, इस आदमी के ब्रह्मचर्य की बात ही और है।

मगर यह मार्ग है अति संकीर्ण, इसलिए कृष्ण ने उसकी सिर्फ निगेटिव खबर देकर सूत्र छोड़ दिया।

कुछ लोग हैं, जो मन को बिना किसी तरह वश में किए, मन को पूरी छूट दे देते हैं। पूरी छूट! मन से कहते हैं, जो तुझे करना है कर, लेकिन उस करने में वे पार खड़े हो जाते हैं। मन को नहीं रोकते, लगाम नहीं पकड़ते मन की। घोड़ों को कह देते हैं, दौड़ो, जहां दौड़ना है। लेकिन दौड़ते हुए घोड़ों में, भागते हुए रथ में, गड्ढों में, खाई में, खड्ड में, वह जो ऊपर रथ पर बैठा है वह, वह अकंप बैठा रहता है।

तंत्र कहता है कि लगाम सम्हालकर और आप अकंप बैठे रहे, तो कुछ मजा नहीं है। छोड़ दो लगाम, घोड़ों को दौड़ने दो; रथ को खड्डों में, खाइयों में गिरने दो; और तुम अकंप रथ पर बैठे रहो, तो ही असली मालकियत है।

पर वह मालकियत बहुत थोड़े-से लोगों का मार्ग है। भूलकर आप लगाम छोड़कर मत बैठ जाना, नहीं तो पहले ही गड्ढे में प्राणांत हो जाएगा! दूसरे संतुलन के लिए नहीं बचेंगे आप।

इसलिए कृष्ण ने असंभव नहीं कहा। असंभव नहीं है, कृष्ण भलीभांति जानते हैं। और कृष्ण से बेहतर कोई भी नहीं जानता। यह असंभव नहीं है, बिलकुल संभव है। लेकिन बहुत ही थोड़े-से लोगों के लिए है, अत्यल्प, न के बराबर; उन्हें गिनती के बाहर छोड़ा जा सकता है। और उनकी गिनती करनी ठीक भी नहीं है, क्योंकि गिनती करने का कोई फायदा नहीं है। अपवाद को बाहर छोड़ा जा सकता है।

नियम की बात कर रहे हैं वे अर्जुन से। और अर्जुन उन लोगों में से नहीं है, जो कि तंत्र के मार्ग पर जा सके। इसीलिए कहा, दुष्प्राप्य है। बड़ी कठिनाई से मिलने वाला है; मिल सकता है। यह वैज्ञानिक चिंतक का लक्षण है। वैज्ञानिक चिंतक अल्प भी शेष हो कुछ मार्ग की सुविधा, उसे छोड़कर चलता है। उसे छोड़कर चलता है।